# आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ

## द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

### भगवान् ऋषभदेव: उनका सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवदान

**दिनांक 13-14 मार्च 2026**

---

छत्रपति शाहू जी महाराज वि.वि., कानपुर परिसर स्थित आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ तथा दीनदयाल शोध केन्द्र के तत्त्वाधान में तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म कल्याणक महोत्सव के पावन शुभावसर पर दिनांक 13-14 मार्च 2026 को तीर्थंकर ऋषभदेव : उनका सामाजिक-सांस्कृतिक अवदान विषय पर दीनदयाल सभागार में प्रो. विनय कुमार पाठक, कुलपति जी की अध्यक्षता एवं मार्गदर्शन में आयोजित किया गया | मंगलाचरण श्री आर्जव जैन ने प्रस्तुत किया | प्राकृत मंगलाचरण श्रीमती अंशु जैन आदि ने प्रस्तुत किया | मंच पर उपस्थित विद्वान डॉ. नीता दवे जैन, प्रति-कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी तथा श्री प्रदीप जैन, मुख्य-अतिथि श्रीमती दीक्षा जैन का सम्मान पुष्पगुच्छ देकर स्वागात किया | सभागार में उपस्थित विद्वानों को संबोधित करते हुए मुख्य-अतिथि श्री दीक्षा जैन ने कहा कि जैन दर्शन के शोध क्षेत्र में कानपुर विश्वविद्यालय की पहल सराहनीय है, यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यहाँ पर आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ के माध्यम से जैन दर्शन के विकास के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम और प्रयास संचालित किये जा रहे हैं | उन्होंने यह भी कहा कि आज पूरी दुनियां में सांप-सीढ़ी का खेल सभी खेलते हैं परन्तु यह बात शायद ही यह जानते हो यह सांप सीढ़ी का खेल जैन धर्म की देन हैं | माननीय कुलपति जी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भगवान ऋषभदेव ने जो शिक्षा दी वह आज की दुनिया में प्रासंगिक है | कोई भी धर्म या दर्शन तभी बढ़ाते हैं जब वह सभी के लिए सुलभ हों | नई पीढ़ी को धर्म और दर्शन की जानकारी होना चाहिए वही भविष्य में उसको आगे लेकर जाते हैं | उन्होंने यह भी कहा की जब मैं कोटा में कुलपति था तब महाराज मुनि श्री सुधासागर जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ | उन्होंने जैन आहारचर्या और दिनचर्या को लोगों को अपने जीवन में उतारने का सन्देश दिया | विशिष्ट वक्तव्य में प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी, प्रति-कुलपति ने भगवान ऋषभदेव द्वारा किये गए कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि असि, मसि और कृषि की भारतीय संस्कृति भगवान ऋषभदेव की देन है | जैन धर्म का भारतीय संस्कृति में जो योगदान है वह कृषि ही नहीं, कला संस्कृति और आर्केटेक्चर में भी नजर आता है | जैन दर्शन के अपरिग्रह आस्तेय, अहिंसा आदि शिक्षाओं का पालन करके अपने जीवन को शान्ति सुख समृद्धि पूर्ण बना सकते हैं | डॉ. नीता दवे जैन ने अपने अतिथि-वक्तव्य में कहा कि भगवान ऋषभदेव भारतीय सभ्यता के प्रथम शिल्पी थे | उन्होंने संयम को प्रमुखता दी | आदिनाथ ने समाज की व्यवस्था का निर्माण किया | मुख्य-वक्ता डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन ने योगेश्वर श्रीकृष्ण और भगवान् आदिनाथ ऋषभदेव की शिक्षाओं के एक सामान होने का उल्लेख किया | कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रिया जैन, स्वागत-वक्तव्य डॉ. सर्वेश मणि त्रिपाठी तथा विषय- प्रवर्तन प्रो. अशोक कुमार जैन तथा डॉ. श्रवण कुमार द्विवेदी ने प्रस्तुत किया | कार्यक्रम में निरज दाहाल,नेपाल, श्री महेंद्र कटारिया, श्री प्रदीप जैन, डॉ. अनूप कुमार जैन, श्री अनिल जैन, श्री कमल जैन, आमोद जैन, श्री राजीव जैन, डॉ. कोमलचंद्र जैन, आचार्य राहुल जैन, जितेन्द्र कुमार यादव आदि उपस्थित रहें |

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. अशोक कुमार जैन, विशिष्ट वक्ता श्री अनुभव जैन, मुख्य-अतिथि निरज दाहाल की उपस्थिति रही | मंगलाचरण आर्जव जैन तथा सात शोध छात्रों ने शोध पत्र वाचन किये | जिसमें डॉ. अंशु जैन, डॉ. प्रिया जैन, डॉ. राकेश मिश्रा, आर्जव जैन, डॉ. आरती जैन आदि ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया |

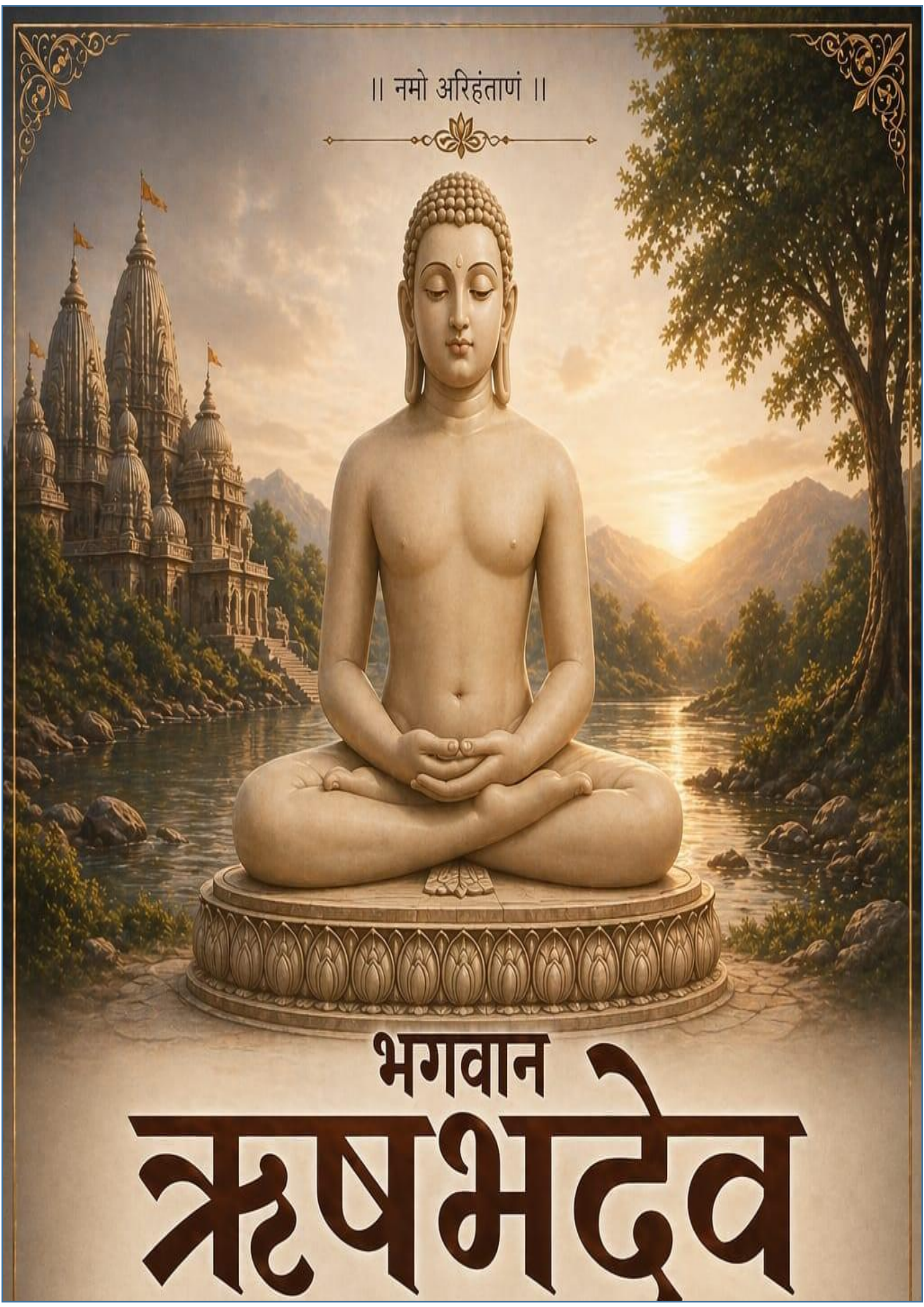
॥ नमो अरिहंताणं ॥
भगवान
ऋषभदेव

द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. विनय कुमार पाठक जी को आमन्त्रण पत्र भेंट करते हुए शोध पीठ के निदेशक व शिक्षकगण |

24 Present

मुख्य-अतिथि श्रीमती दीक्षा जैन, मुख्य विकास अधिकारी(CDO), कानपुर एवं विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी व कुलसचिव श्री राकेश कुमार जी को अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए आमंत्रित करते हुए शोध पीठ के समन्वयक श्री राजीव जैन एवं शोध पीठ के शिक्षकगण |

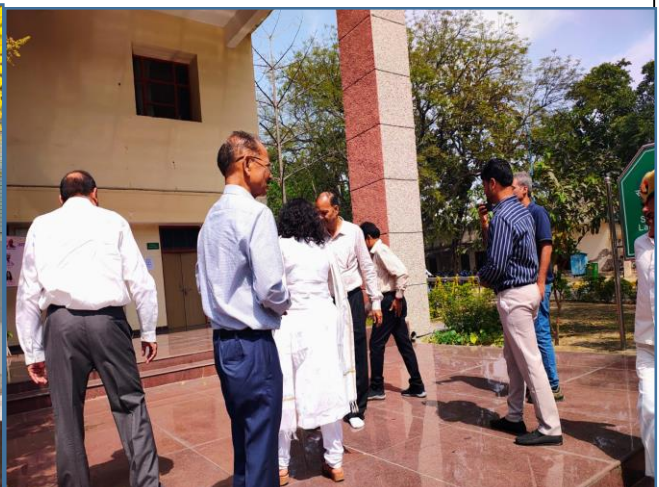

मुख्य-अतिथि श्रीमती दीक्षा जैन, मुख्य विकास अधिकारी(CDO), कानपुर का स्वागत करते हुए शोध पीठ के न्यासीगण श्री प्रदीप कुमार जैन 'तिजारा', श्री महेंद्र कटारिया, सी.ए. अरविंद जैन, श्री कमल जैन तथा शोध पीठ के समन्वयक श्री राजीव जैन |

24 Present

माननीय कुलपति जी का कार्यक्रम में आगमन तथा स्वागत करते हुए शोध पीठ के न्यासी गण |

कार्यक्रम के शुभारम्भ में दीप-प्रज्वल्लित करते हुए मुख्य-अतिथि, प्रति-कुलपति, मुख्य-वक्ता, न्यासी गण तथा मंगलाचरण करते हुए शोध पीठ के विद्यार्थी |

श्रीमती दीक्षा जैन

कार्यक्रम में आये हुए सभी सम्मानीय आतिथियों का स्वागत शाल,माला और पादप गुच्छ भेंट करके किया गया |

कार्यक्रम में मंगलाचरण पर मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति दी अद्विका जैन ने |

आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ
णमो अरिहंताणं,
णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोएसव्वसाहूणं।

आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन
दीनदयाल शोध केन्द्र

णमोकार महामंत्र
णमो अरिहंताणं,
णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोएसव्वसाहूणं।

Thank you for downloading OBS Studio!
Getting Started

zoom
zoom

आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ
द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ
द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ
(स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज)
दीनदयाल शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर
द्वारा आयोजित
द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
तीर्थंकर ऋषभदेव :

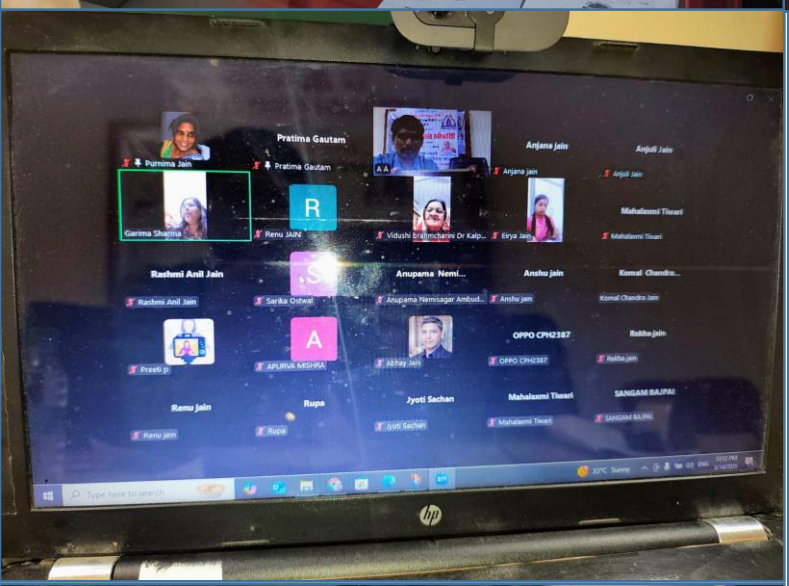


दीनदयाल शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर
द्वारा आयोजित
द्विदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी






Pratima Gautam
Anjana jain
Anjuli Jain
Mahalaxmi Tiwari
Rashmi Anil Jain
Anshu jain
OPPO CPH2387
Renu jain
Rupa
Jyoti Sachan
SANGAM BAJPAI


Pratima Gautam
SANGAM BAJPAI

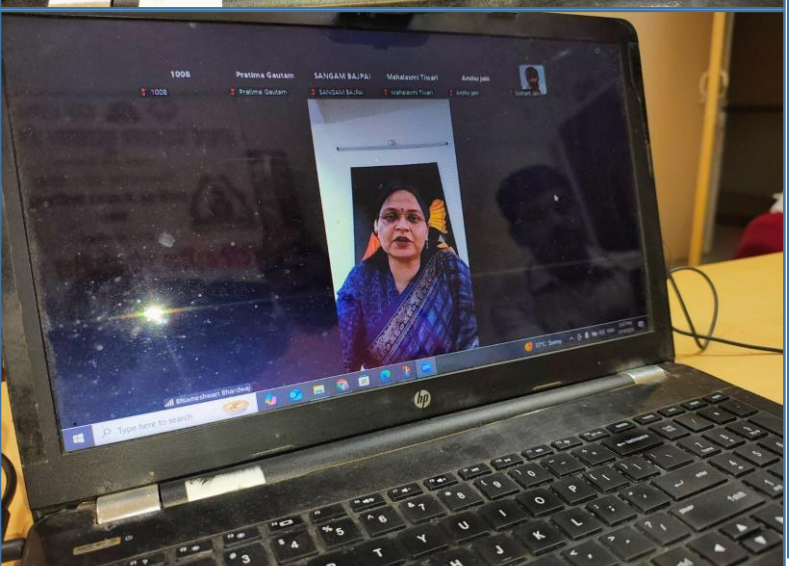

# ऋषभदेव की शिक्षाएं समाज के लिए उपयोगी

कानपुर। छत्रपति शाहूजी महाराज विवि में आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ और दीनदयाल शोध केंद्र की ओर से तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसका विषय तीर्थंकर ऋषभदेव : उनका सामाजिक-सांस्कृतिक अवदान रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ने की। मुख्य अतिथि सीडीओ दीक्षा जैन ने कहा कि विवि की ओर से जैन दर्शन के अध्ययन और शोध के लिए उठाया गया कदम सराहनीय है। उन्होंने बताया कि आज विश्व में खेले जाने वाला सांप-सीढ़ी का खेल भी जैन धर्म से जुड़ा माना जाता है। कुलपति प्रो. पाठक ने कहा कि भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएं समाज के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। प्रति-कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी ने जैन धर्म की अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय जैसी शिक्षाओं का महत्व बताया। कार्यक्रम में कई विद्वानों ने अपने विचार रखे। दूसरे सत्र में शोधार्थियों ने भगवान ऋषभदेव से संबंधित विषयों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। (ब्यूरो)

# जैन धर्म और दर्शन की जानकारी लें युवा

कार्यक्रम को सम्बोधित करते विवि के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक व अन्य।

**डॉ. अंशु जैन, डॉ. प्रिया जैन आदि ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया**

कानपुर, 13 मार्च। छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय स्थित आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ तथा दीनदयाल शोध केंद्र के तत्वावधान में तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म कल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर दो दिवसीय तीर्थंकर ऋषभदेव उनका सामाजिक-सांस्कृतिक अवदान विषय पर दीनदयाल सभागार में मुख्य अतिथि दीक्षा जैन ने कहाकि जैन दर्शन के शोध क्षेत्र में कानपुर विश्वविद्यालय की पहल सराहनीय है। यहाँ पर आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ के माध्यम से जैन दर्शन के विकास के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम और प्रयास संचालित किये जा रहे हैं। उन्होंने कहाकि आज पूरी दुनिया में सांप-सीढ़ी का खेल सभी खेलते हैं परन्तु यह बात शायद ही यह जानते हो यह सांप सीढ़ी का खेल जैन धर्म की देन है। विवि के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ने कहाकि भगवान ऋषभदेव ने जो शिक्षा दी। वह आज की दुनिया में प्रासंगिक है। कोई भी धर्म या दर्शन तभी बढ़ते हैं जब वह सभी के लिए सुलभ हो। नई पीढ़ी को धर्म और दर्शन की जानकारी होना चाहिए वही भविष्य में उसको आगे लेकर जाते हैं। उन्होंने कहा कि जब मैं कोटा में कुलपति था तब महाराज मुनि श्री सुधासागर जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने जैन आहारचर्या और दिनचर्या को लोगों को अपने जीवन में उतारने का सन्देश दिया। विवि के प्रति कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी ने भगवान ऋषभदेव द्वारा किये गए कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि असि, मसि और कृषि की भारतीय संस्कृति भगवान ऋषभदेव की देन है। जैन धर्म का भारतीय संस्कृति में जो योगदान है वह कृषि ही नहीं, कला संस्कृति और आर्केटेक्चर में भी नजर आता है। डॉ. नीता दवे जैन ने कहाकि भगवान ऋषभदेव भारतीय सभ्यता के प्रथम शिल्पी थे। उन्होंने संयम को प्रमुखता दी। आदिनाथ ने समाज की व्यवस्था का निर्माण किया। मुख्यवक्ता डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन ने योगेश्वर कृष्ण और भगवान् आदिनाथ ऋषभदेव की शिक्षाओं के एक सामान होने का उल्लेख किया। डॉ. अंशु जैन, डॉ. प्रिया जैन, डॉ. राकेश मिश्रा, आर्जव जैन, डॉ. आरती जैन आदि ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। इस दौरान निरज दाहाल, नेपाल, महेंद्र कटारिया, प्रदीप जैन, डॉ. अनूप कुमार जैन, अनिल जैन, कमल जैन, आमोद जैन, राजीव जैन, डॉ. कोमलचंद्र जैन, आचार्य राहुल जैन, जितेन्द्र कुमार जैन, प्रो. अशोक कुमार जैन, अनुभव जैन, मंगलाचरण आर्जव जैन तथा सात शोध छात्रों ने शोध पत्र वाचन किये। कार्यक्रम का संचालन डा. प्रिया जैन ने किया।



# आचार्य ऋषभदेव की शिक्षाएं समाज के लिए उपयोगी

संवाददाता/ डीटीएनएन

कानपुर। छत्रपति शाहू जी महाराज वि.वि., कानपुर परिसर स्थित आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ तथा दीनदयाल शोध केन्द्र के तत्त्वावधान में तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म कल्याणक महोत्सव के पावन शुभावसर पर शुक्रवार और शनिवार को तीर्थंकर ऋषभदेव = उनका सामाजिक-सांस्कृतिक अवदान विषय पर दीनदयाल सभागार में प्रो. विनय कुमार पाठक, कुलपति की अध्यक्षता एवं मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। मंगलाचरण आर्जव जैन ने प्रस्तुत किया। प्राकृत मंगलाचरण अंशु जैन आदि ने प्रस्तुत किया। मंच पर उपस्थित विद्वान डॉ. नीता दवे जैन, प्रति-कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी तथा प्रदीप जैन, मुख्य-अतिथि दीक्षा जैन का सम्मान पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। सभागार में उपस्थित विद्वानों को संबोधित करते हुए मुख्य-अतिथि दीक्षा जैन ने कहा कि जैन दर्शन के शोध क्षेत्र में कानपुर विश्वविद्यालय की पहल सराहनीय है, यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यहाँ पर आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ के माध्यम से जैन दर्शन के विकास के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम और प्रयास संचालित किये जा रहे हैं 7 उन्होंने यह भी कहा कि आज पूरी दुनियां में सांप-सीढ़ी का खेल सभी खेलते हैं परन्तु यह बात शायद ही यह जानते हो यह सांप सीढ़ी का खेल जैन धर्म की देन हैं 7 माननीय कुलपति जी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भगवान ऋषभदेव ने जो शिक्षा दी वह आज की दुनिया में प्रासंगिक है। कोइ भी धर्म या दर्शन तभी बढ़ते हैं जब वह सभी के लिए सुलभ हों। नई पीढ़ी को धर्म और दर्शन की जानकारी होना चाहिए वही भविष्य में उसको आगे लेकर जाते हैं। उन्होंने यह भी कहा की जब मैं कोटा में कुलपति था तब महाराज मुनि सुधासागर का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने जैन आहारचर्या और दिनचर्या को लोगों को अपने जीवन में उतारने का सन्देश दिया। विशिष्ट वक्तव्य में प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी, प्रति-कुलपति ने भगवान ऋषभदेव द्वारा किये गए कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि असि, मसि और कृषि की भारतीय संस्कृति भगवान ऋषभदेव की देन है। जैन धर्म का भारतीय संस्कृति में जो योगदान है वह कृषि ही नहीं, कला संस्कृति और आर्केटे. र में भी नजर आता है। जैन दर्शन के अपरिग्रह आस्तेय, अहिंसा आदि शिक्षाओं का पालन करके अपने जीवन को शान्ति सुख समृद्धि पूर्ण बना सकते हैं। डॉ. नीता दवे जैन ने अपने अतिथि-वक्तव्य में कहा कि भगवान ऋषभदेव भारतीय सभ्यता के प्रथम शिल्पी थे। उनहोंने संयम को प्रमुखता दी। आदिनाथ ने समाज की व्यवस्था का निर्माण किया। मुख्य-वक्ता डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन ने योगेश्वर श्रीकृष्ण और भगवान् आदिनाथ ऋषभदेव की शिक्षाओं के एक सामान होने का उल्लेख किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रिया जैन, स्वागत-वक्तव्य डॉ. सर्वेश मणि त्रिपाठी तथा विषय-प्रवर्तन प्रो. अशोक कुमार जैन तथा डॉ. श्रवण कुमार द्विवेदी ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में निरज दाहाल, नेपाल, महेंद्र कटारिया, प्रदीप जैन, डॉ. अनूप कुमार जैन, अनिल जैन, कमल जैन, आमोद जैन, राजीव जैन, डॉ. कोमलचंद्र जैन, आचार्य राहुल जैन, जितेन्द्र कुमार जैन आदि उपस्थित रहें।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. अशोक कुमार जैन, विशिष्ट वक्ता श्री अनुभव जैन, मुख्य-अतिथि निरज दाहाल की उपस्थिति रही 7 मंगलाचरण आर्जव जैन तथा सात शोध छात्रों ने शोध पत्र वाचन किये 7 जिसमें डॉ. अंशु जैन, डॉ. प्रिया जैन, डॉ. राकेश मिश्रा, आर्जव जैन, डॉ. आरती जैन आदि ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया 7